# मनोविकारों का दहन का पर्व

## होली

जन साधरण की दृष्टि से होली वैर भाव को भूलकर आपस में मिलन-मिलान का ‘प्रेम पर्व‘ है। युवाओं के लिये यह मस्ती भरा ‘रंग पर्व‘ है जिसने कुछ भी कहने-करने की खुली छूट है। कुछ भी करके ‘बुरा न मानो होली है‘ कह देने भर से ही सारे पाप धो डालने का अच्छा अवसर उपलब्ध कराता है होली। शोहदों और मद्यपों (शराबियों), भंगेड़ियों तथा नशाखोरों के लिए होली. जी भर कर शरारत, छेड़छाड़ और नशा करने का दिन बन जाता है तो किशोर व किशोरियों के लिए सहेलियों से हंसी-ठिठोली करने तथा संसपर्श सुख प्राप्त करने का मौका लेकर आने वाला त्योहार है होली का पर्व।

फाल्गुन मास की पूर्णिमा तथा चैत्र की प्रथमा को दो दिनों में अलग-अलग-रंग और ढंग में नजर आने वाला होली का पर्व संस्कारशील तथा मर्यादित भारतीय संस्कृति का एक नया ही रूप सामने लाता है। इस दिन सामाजिक बंधनों, नियमों तथा संयम की सारी वर्जनाएं टूटी नजर आती हैं। रंग बदलती प्रकृति के साथ मानो सारा हिन्दु समाज भी बदले रंग में नजर आता है। रिश्ते नातों की मर्यादाएं समय के साथ ताक पर रखी जा रही हैं। प्रेम पर्व का नाम पाने के बावजूद तथा गिले शिकवे भूलने-मिटाने की परम्परा के उपरान्त भी होली का जो विकृत रूप सामने आ रहा है उसमें वास्तव में चिंतन की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

शायद होली के हुड़दंग को देखकर ही भारतीय ग्रंथों एवं पुराणों ने इसे शूद्रों के पर्व की संज्ञा दे डाली है। यों पौराणिक मिथकों के अनुसार होली मनाने का कारण राक्षसराज हिरण्यकश्यप के पुत्र प्रहलाद की हत्या के षड़यंत्र के तहत अग्नि में प्रहलाद सहित प्रवेश कर उसे जलाकर मान डालने का प्रयास करते हुए स्वयं भस्म होना बताया जाता है। उल्लेखनीय है कि होलिका को अग्नि प्रवेश करने पर भी न जलने का वरदान प्राप्त था मगर भगवदकृपा से होलिका तो जल कर भस्म हो गयी और हरिकृपा से प्रहलाद सकुशल बच गया।

यदि आध्यात्म की दृष्टि से देखें तो यहां प्रहलाद, होलिका, हिरण्यकश्यप, हरिविष्णु और अग्नि अलग-अलग प्रतीक हैं। प्रहलाद जहां निश्छलता, मासूमियत और अटल निश्चय के साथ-साथ अच्छाई, भक्ति एवं समर्पण का प्रतीक है तो हिरण्यकश्यप दुष्टता, तामसी प्रवृत्ति, उत्पीड़न, निरंकुशता, अहंकार तथा स्वेच्छाचारिता का प्रतिनिधि है। होलिका असत्य , गर्व, हिंसा, आतंक का साथ देने वाली षड़यंत्रकारी शक्ति का उदाहरण है। यहां उल्लेखनीय है कि सात्विक प्रवृत्ति प्रहलाद के रूप मे असहाय व निर्बल होते हुए भी न्याय को पक्ष और सत्य के राज बाहक के रूप में डटकर खड़ी नजर आती है। यही नहीं तमाम षड़यंत्रों के बावजूद भी हर संकट से उबरकर और भी मज़बूती से सामने आती है और अंतत: विजयी होती है!

हिरण्यकश्यप और होलिका बंधु-भगिनि होने के बावजूद अपने-अपने स्वार्थ में लिप्त शक्तियां हैं। ये दोनों राजसी व तामसी प्रवृत्तियों के ध्वजवाहक बनकर राजसत्ता और मद का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा निरीह प्रजा पर अत्याचार करने के लिए एक पाले में खड़े नजर आते हैं। ये दोनों सत्य के स्वर को

कुचलने का हर संभव प्रयास करते हैं परन्तु अंततः पराजय तथा पराभाव को प्राप्त होते हैं, अपने प्राण तक गंवाने पड़ते हैं इन्हें।

इस सत्-असत् के संघर्ष में अग्नि तथा हरि विष्णु भी दो प्रतीक ही हैं। अग्नि प्रतीक है सामाजिक मर्यादाओं तथा नियमों एवं उनके नियमन का यं नियम समय एवं कालनिरपेक्ष है तथा प्रत्येक पर लागू होते हैं। इनका पालन न करने वाला चाहे कितना भी सशक्त व बलवान क्यों न हो। अंततः उसे परिणाम भुगतना ही पड़ता है।

अग्नि का काम है जलाना जो भी उसने हाथ डालेगा वह ज़लेगा ही । हिरण्यकश्यप ने उसमें हाथ डाला तो उसे जलाना ही था, हां अन्याय का पक्ष लेकर कुसंग का फल होलिका ने भी भुगता। अग्नि का स्वभाव है कि वह लकड़ी को जलाकर राख कर देती है और सोने को तपाकर कुन्दन बना देती है। परीक्षा की अग्नि में तपकर सत्य प्रहलाद के रुप में कुन्दन सा तपकर बाहर निकला तो होलिका यहीं भस्म हो गई।

हरि विष्णु यहां नियंता व नियामक तथा सूत्रधार हैं। वे 'आत्मा' की शुद्धि के लिए हर आयोजन करते हैं। हिरण्यकश्यप की कलुषित आत्मा को वह नरसिंह बन कर 'सोघते' हैं तो होलिका को अग्नि के माध्यम से 'मुक्त' कर आत्मशोधन का अवसर प्रदान करते हैं, वहीं प्रहलाद को उपकृत व पुरस्कृत कर सत्य की विजय की आवधारणा को प्रस्थापित करते हैं हरि विष्णु।

यानि होली महज़ गुलाल फेंकने, रंग डालने या अबीर मलऩे भर का उपक्रम मांत्र नहीं वरन् उससे भी बढ़कर बहुत कुछ हैं। होली पर सजी रंगोली भी जीवन के विविध पक्षों को उजागर करती है जो बताती हे कि जीवन के क्षण निस्पृह भाव से, उन्मुक्त होकर दूसरों को खुशी बांटने के लिए होने जरूरी है।

मनोविज्ञान के धरातल पर भी होली 'तनाव' व 'मग्नाशा' से मुक्ति का मार्ग दिखाती है। वर्ष पर्यन्त दुराग्र, पूर्वग्रह पालते आधुनिकता की दौड़ में अंधे लोगों के अनेकों मनोविकार होली में बहकर तिरोहित हो जाते हें जो स्वस्थ व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक सिद्ध होते हें तथा कालांतर में यह व्यक्ति रूपी इकाई भी व्यष्टि से समष्टि रूप में, एक घटक बनकर समाज, देश व काल का निर्माण करता है। मनोविज्ञान के एक अन्य पक्ष इदं, अहं और परम में से व्यस्कों के इदंभाव को संतुष्ट करने का साधन बनकर आता है होली।

रंगों के पर्व के रुप में विख्यात होली के रंग तो प्रकृति स्वयं ही तय कर देती है। हरा गेहूं समृद्धि का प्रतीक बनकर आता है, तो पीली सरसों हर्ष की संवाहक बनती है। फूलों की सुवास हर्ष एवं समृद्धि के साथ गुणों की सुगंध बांटने की उद्घोषणा करती है। लाल रंग यदि ओज का संदेश लाता है तो गुलाबी संयम की सलाह देता लगता है।

अस्तु, होली तो होली है। इसे हंसी-खुशी से मनाएं और वैरभाव, मनोविकारों, पूर्वग्रहों, तामसी प्रवृत्ति को इसी में दहन करके नयी खुशियों, सत्य, धर्म व न्याय तथा सात्विक प्रवृत्तियों की स्थापना करे, तभी सार्थक होगा होली (पावन) का नाम।

## होली पर  कैसा हो आपका व्यवहार

होली उमंग, उत्साह प्रेम व सौहार्द का त्यौहार है। प्रतिवर्ष खुशीयों की सौगात लेकर आने वाला पर्व परम्परागत ढंग व जरा समझदारी तथा व्यवहारकुशल होकर बनाया जाय तो होली का रंग और भी चोखा लगाने लगता है। होली के दिन जब आप किसी मित्र या अपने ही सगे संबधियों के घर रंग लेकर जा हरे हैं तो आप ध्यान रखें कि रंग कम भावनाएं ज्यादा उड़ेंलें, जिससे रंग लगवाने वाला  आपके प्रति समर्पित भाव से स्नेह का प्रदर्शन कही ज्यादा करेगा। यूँ भी अपनी खुशी का इजहार व उमंग का प्रदर्शन जब सबके बीच में रहकर किया जायें तो सभी को अच्छा लगता है बजाय लुक छुप के।

आप जब भी किसी पर रंग डालें तो पहले सामने वाले को मूड को भांप लें। ऐसा न हो कि रंग डाला, और वह खुद गुस्से में लाल-पीला होकर आपको अपशब्द कहे। यूं भी काम पर आते जाते लोंगो पर ' होली है', समझ कर ही रंग न डाला जाये क्योंकि ऐसा करना सुसंस्कृत व्यक्तियों को कदापि शोभा नहीं देता। यदि आपको रंग डालना ही है तो आप शालीन तरीके से उनके घर जायें, जिससे वे भी आपकी भावना की कद्र करें।

होली मनाने का आनन्द तभी है जब व्यक्ति एक दूसरे के साथ मौज मस्ती में डूब जाये। हां, होली खेलने जाते समय ध्यान रखे कि जहां तक हो सके, सूखे रंगों का व गुलाल इत्यादि का ही प्रयोग करें, क्योंकि आजकल रंगो में कई घातक विषैले पदार्थ मिले रहते हैं, जो हमारी आंखों व चमड़ी के लिए अति हानिकारक होते हैं। बच्चों से होली खेलते वक्त काफी संयम बरतें व उन पर गीले रंगों को कदापि न डालें। न ही तैलीय रंग व सफेदा इत्यादि का प्रयोग करें। आप होली खेलने अवश्य निकले, परन्तु ऐसे अवसर पर शराब, भांग व नशीले पदार्थों का सेवन कदापि न करें, क्योंकि इनके सेवन के पश्चात आप द्वारा ही गायी उच्छृखलता व अश्लील हरकतें आपके व्यक्तित्व को गिरा देंगी। व्यक्ति का व्यवहार ही उसके चरित्र को आंकने का मान -दंड होता है, अत: इसके प्रति जरा भी लापरवाही न बरतें।

होली पर आप ऐसा व्यवहार करे, जिससे सदैव आपकी प्रशंसा हो। इसलिए शिष्टता को ध्यान में रखकर अपने से बड़ों व महिलाओं के साथ किये जाने वाले व्यवहार को संयत रखें तथा अपने चरित्र को इतना दृढ़ बनायें कि ऐरा-गैरा भी आप पर उंगली न उठा सके। होली मनाइये, जी भर के मनाइयें, पर शिष्टता के साथ, जिससे आपको पूर्ण आनन्द आये व दूसरों को भी।स्मरण रहे कि यह पर्व उल्लास व उमंग का है व वर्ष भर इस त्यौहार की उमंग से आपमें स्फूर्ति बनी रहे ताकि अगले वर्ष आप और भी ज्यादा प्रफुल्लित रहेंगे व बड़ी बेबसी से इंतजार रहेगा होली का।


- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com